

● LIVE CLASS 11th हिंदी आधार

BACKLOG
MARATHON
S E R I E S

1. नमक का दरोगा
2. मियाँ नसीरुद्दीन
3. अपू के साथ ढाई साल
4. हम तौ एक एक करि जाना / संतों देखत जग बौराना
5. मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई / पग घुंघरु बांधि मीरां नाची
6. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़: लता मंगेशकर





आरोग्य (आधार)

नमक का दारोगा

CHAPTER 1



नमक का दारोगा

जीवन परिचय

प्रेमचंद

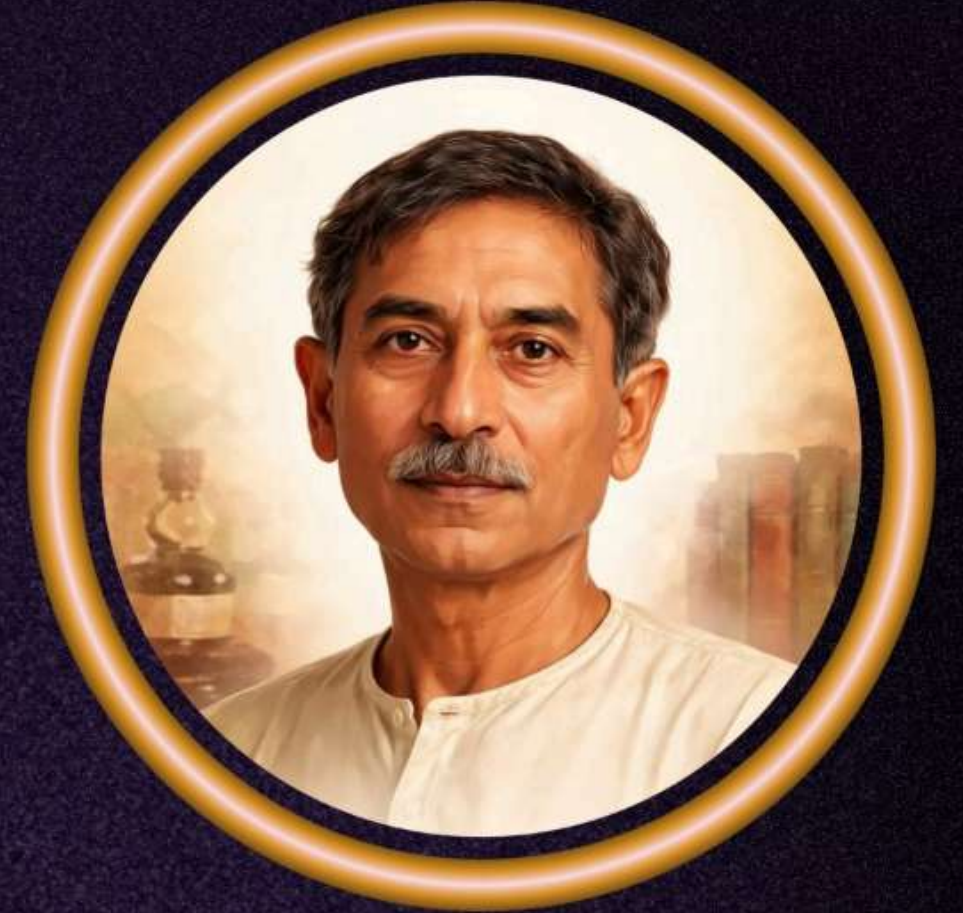
मूल नाम: धनपत राय

जन्म: सन् 1880, लमही गाँव (उ.प्र.)

प्रमुख रचनाएँ: सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान (उपन्यास); सोजे वतन, मानसरोवर-आठ खंड में, गुप्त धन (कहानी संग्रह); कर्बला, संग्राम, प्रसंग (निबंध-संग्रह)

प्रेम की देवी (नाटक); कुछ विचार, विविध विचार, विविध प्रसंग (निबंध-संग्रह)

मृत्यु: सन् 1936

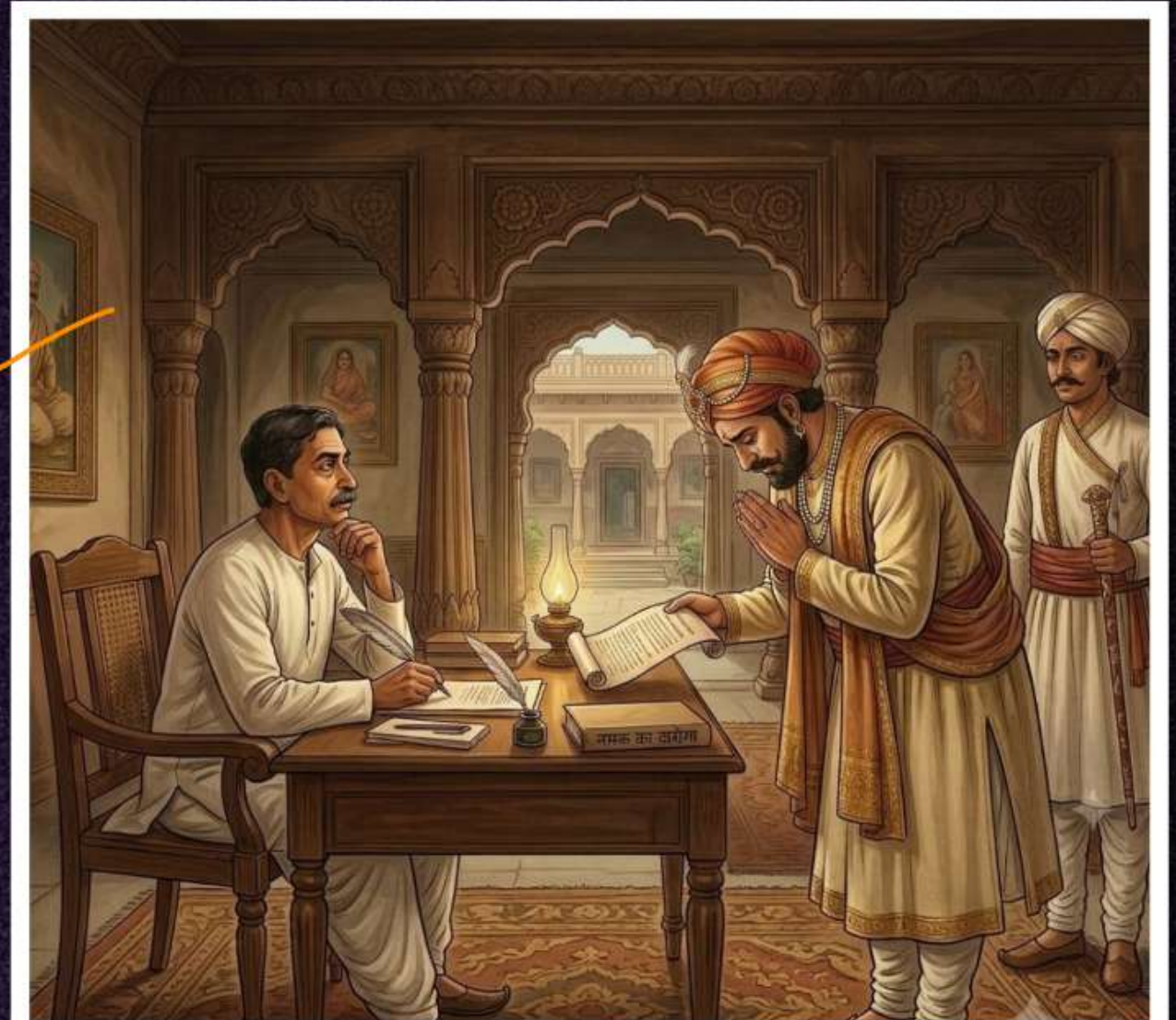


प्रेमचंद

नमक का दारोगा

पाठ का सार

प्रस्तुत कहानी 'नमक का दारोगा' प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी है। कहानी में ही आए हुए एक मुहावरे को लें तो यह धन के ऊपर धर्म की जीत की कहानी है। कहानी में धन का प्रतिनिधित्व पंडित अलोपीदीन और धर्म का प्रतिनिधित्व मुंशी वंशीधर नामक पात्रों ने किया है। ईमानदार कर्मयोगी मुंशी वंशीधर को खरीदने में असफल रहने के बाद पंडित अलोपीदीन अपने धन की महिमा का उपयोग कर उन्हें नौकरी से निकलवा देते हैं, लेकिन अंत में सत्य के आगे उनका सिर झुक जाता है।

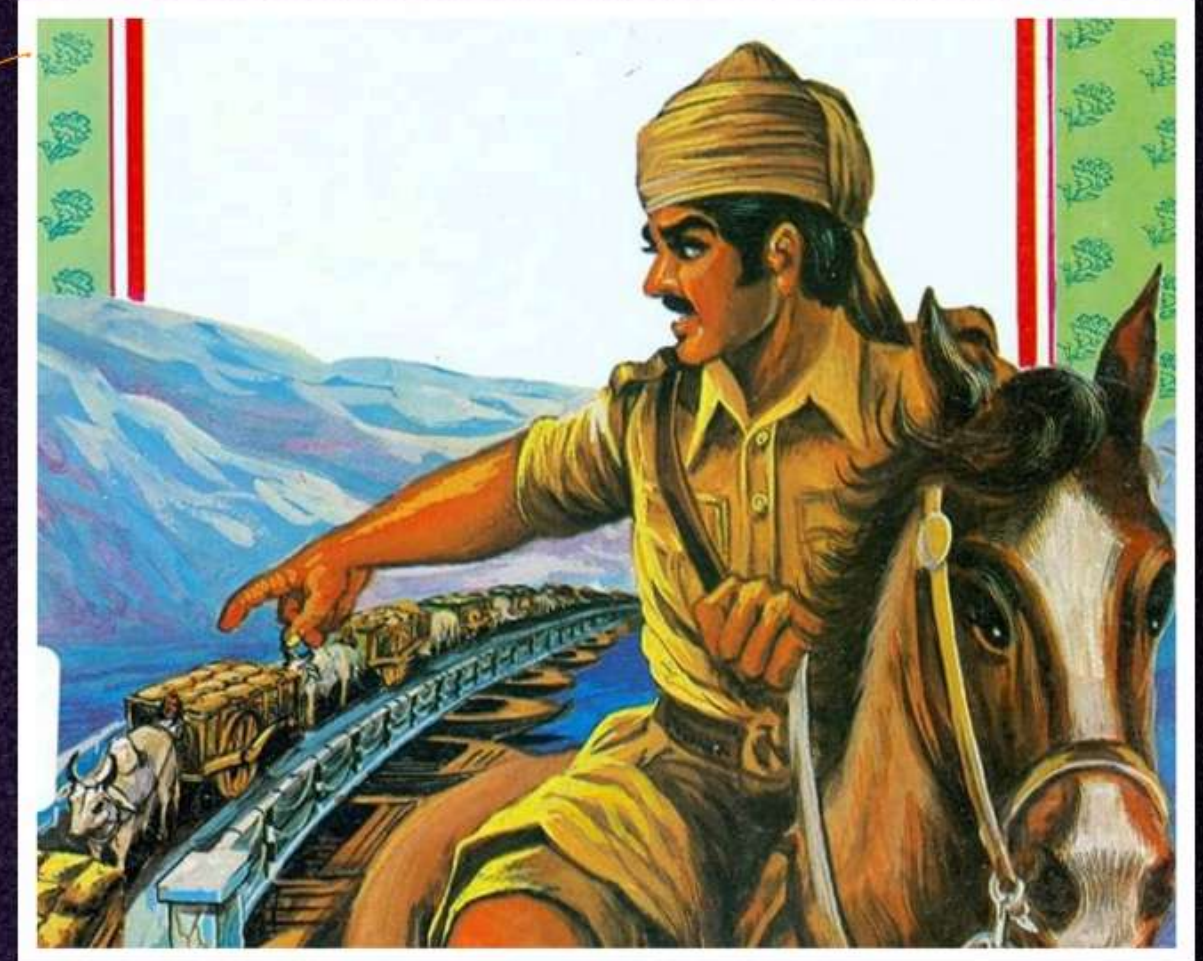


नमक का दारोगा

वे सरकारी नौकरी से निकाले गए वंशीधर को बहुत ऊँचे वेतन और भत्ते के साथ अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं और गहरे अपराध-बोध से भरी हुई वाणी में निवेदन करते हैं, कि 'परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह वंशीधर को सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्वंड, किन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे। कहानी के इस अंतिम प्रसंग से पहले तक की समस्त घटनाएँ प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा उस भ्रष्टाचार की व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता को अत्यंत साहसिक तरीके से हमारे सामने उजागर करती हैं।

नमक का दारोगा

अंग्रेजों ने नमक पर अपना एकाधिकार करने के लिए नमक का एक नया व अलग विभाग बना दिया था। जिससे नमक जैसी तुच्छ वस्तु भी लोगों को आसानी से मिलनी मुश्किल हो गई। इसी कारण कुछ लोग इसका चोरी छुपे व्यापार भी करने लगे जिसके कारण भ्रष्टाचार की जड़े खूब फैलने लगी। कोई रिश्वत देकर अपना काम करवाता तो, कोई चालाकी - होशियारी से। इस कारण अधिकारी वर्ग की कमाई तो अचानक कई गुना बढ़ गई थी।



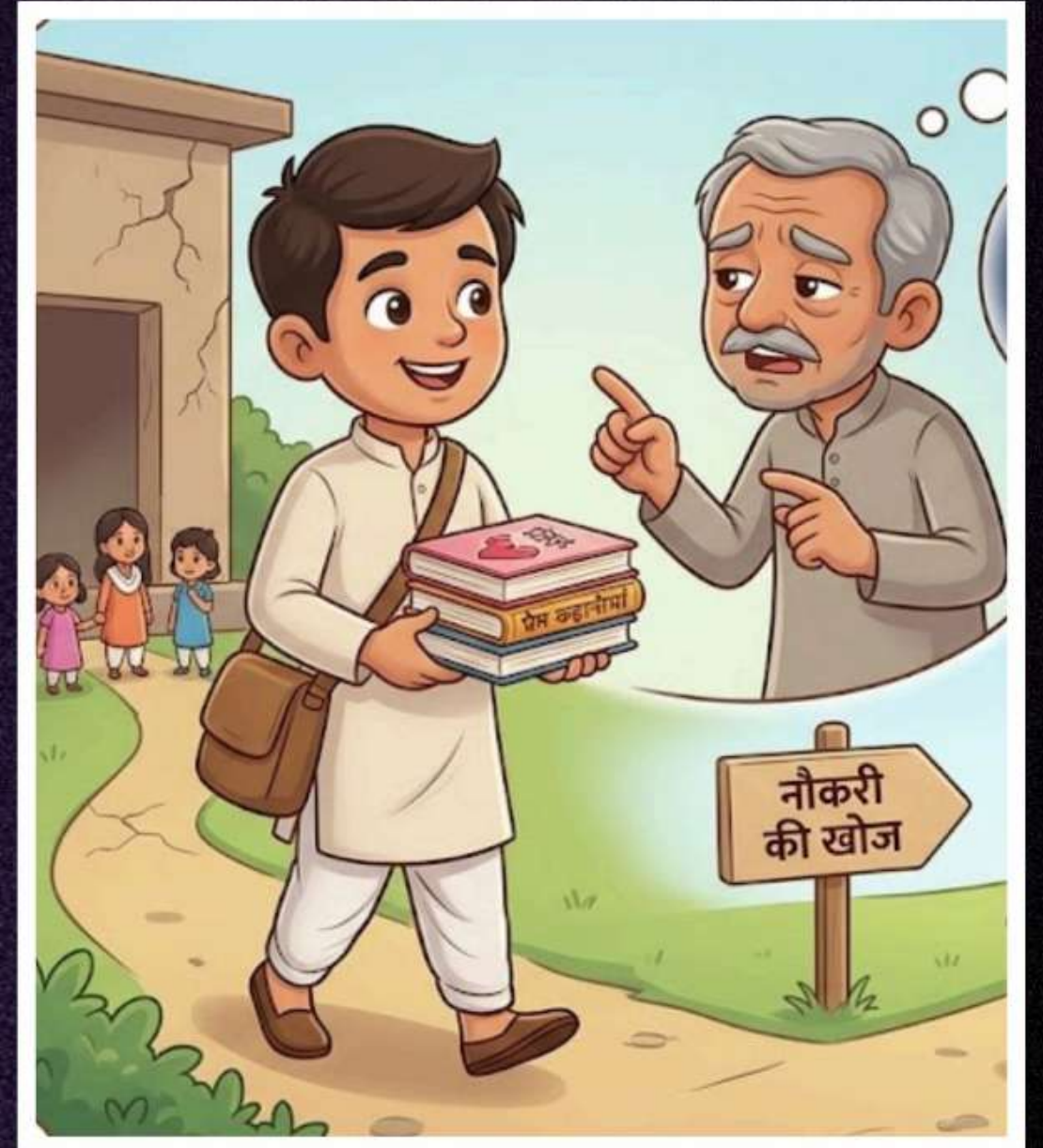
नमक का दायोगा

इस विभाग में ऊपरी कमाई बहुत अधिक होती थी। इसीलिए अधिकतर लोग इस विभाग में काम करने के इच्छुक रहते थे। बड़े-बड़े पदों पर आसीन लोग भी नमक अधिकारी बनने को तत्पर रहते थे। लेखक कहते हैं कि उस दौर में लोग महत्वपूर्ण विषयों के बजाय प्रेम कहानियों व श्रृंगार रस के काव्यों को पढ़कर भी उच्च पदों में आसीन हो जाते थे।



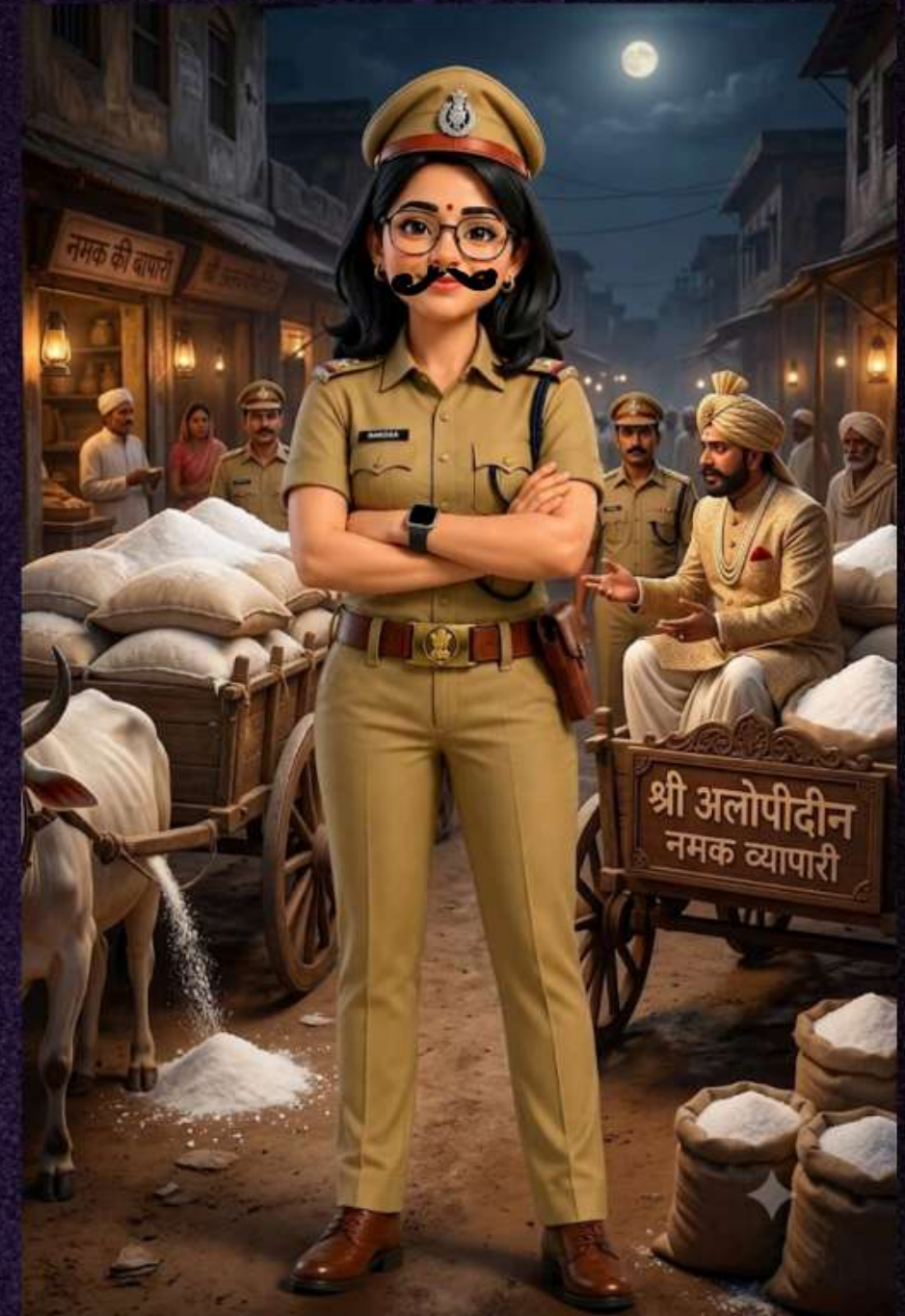
नमक का दारोगा

कहानी के नायक मुंशी वंशीधर भी इतिहास भूगोल की बातों से ज्यादा प्रेम कहानियों का अध्ययन कर नौकरी की खोज में निकल पड़े। उनके पिता को जीवन का कड़वा अनुभव था। इसीलिए कर्ज के बोझ तले डूबे पिता ने अपने घर की दुर्दशा और घर में जवान होती बेटियों का हवाला देकर वंशीधर से कहा कि पद प्रतिष्ठा के आधार पर नौकरी का चुनाव करने के बजाए ऐसी नौकरी का चुनाव करना जिसमें ऊपरी कमाई ज्यादा होती हो। ताकि घर के हालात कुछ सुधर सकें। वंशीधर के पिता का मानना था कि मासिक वेतन तो पूर्णमासी के चाँद की तरह होती है जो महीने के पहले दिन दिखाई देती है और धीरे-धीरे घटते-घटते अमावस्या तक खत्म हो जाती है।



नमक का दारोगा

लेकिन ऊपरी कमाई तो एक बहता स्रोत है जो हमेशा आदमी की प्यास बुझाता है यानी आदमी की जरूरतें पूरी करता है। वो साथ में यह भी कहते कि वेतन तो मनुष्य देता है। इसीलिए इसमें वृद्धि नहीं होती है। ऊपरी कमाई ईश्वर की देन है इसीलिए इसमें बरकत होती रहती हैं। उपदेश देने के साथ-साथ पिता ने आशीर्वाद भी दिया और आज्ञाकारी पुत्र की तरह वंशीधर ने पिता की बात सुनी और घर से नौकरी की तलाश में निकल पड़े। सौभाग्य से उन्हें नमक विभाग में दारोगा की नौकरी मिल गई जिसमें वेतन तो अच्छा था ही साथ में ऊपरी कमाई भी बहुत अधिक थी।



नमक का दारोगा

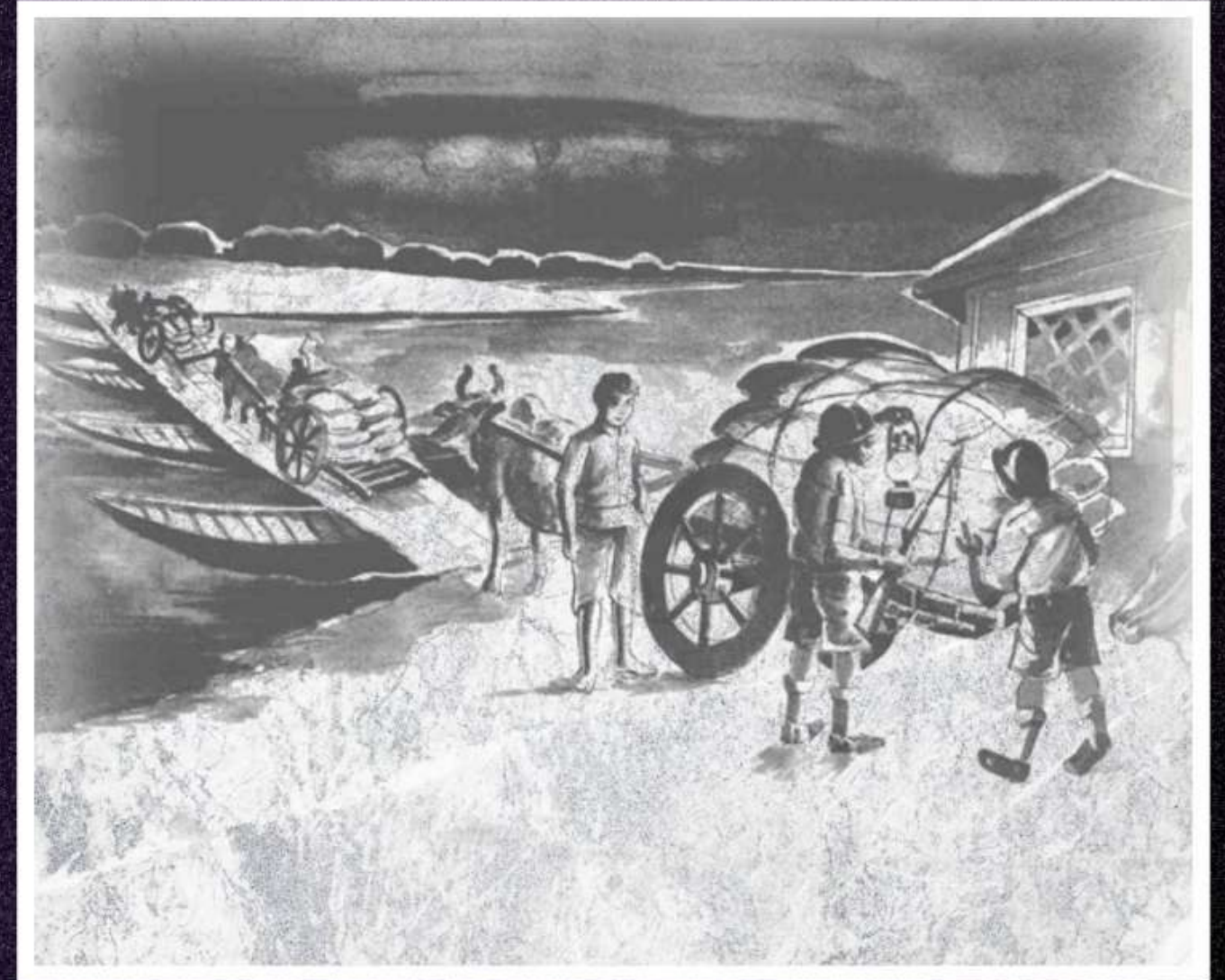
जब यह बात उनके पिता को पता चली तो वो बहुत अधिक खुश हो गए। मुंशी वंशीधर ने सिर्फ छह महीने में ही अपनी कार्यकुशलता, ईमानदारी और अच्छे व्यवहार से सभी अधिकारियों को अपना प्रशंसक बना लिया था। सभी अधिकारी उन पर बहुत अधिक विश्वास करते थे।

नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना नदी बहती थी। उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। जाड़े के दिन व रात का समय था। दारोगा जी बहुत गहरी नींद में सोए हुए थे कि अचानक उनकी आंख खुली और उन्हें नदी के पास गाड़ियों और नाव चलाने वाले लोगों की आवाजें सुनाई दीं।

सही

नमक का दारोगा

दारोगा जी को संदेह हुआ कि इतनी रात में गाड़ियां नदी क्यों पार कर रही हैं। जरूर कुछ गड़बड़ है। यह सोचकर उन्होंने वर्दी पहनी और जेब में बंदूक रख, घोड़े में बैठकर पुल तक पहुंचे। वहां उन्होंने देखा कि गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल पार कर रही थी। उन्होंने पास जाकर पूछा कि यह गाड़ियां किसकी है ? तो पता चला कि यह गाड़ियां पंडित अलोपीदीन की है। मुंशी वंशीधर यह सुनकर चौंक पड़े क्योंकि पंडित अलोपीदीन उस इलाके के एक प्रतिष्ठित मगर बहुत ही चालाक जमींदार थे। उनका व्यापार बहुत लम्बा-चौड़ा था। वो लोगों को धन कर्ज के रूप में देते थे।



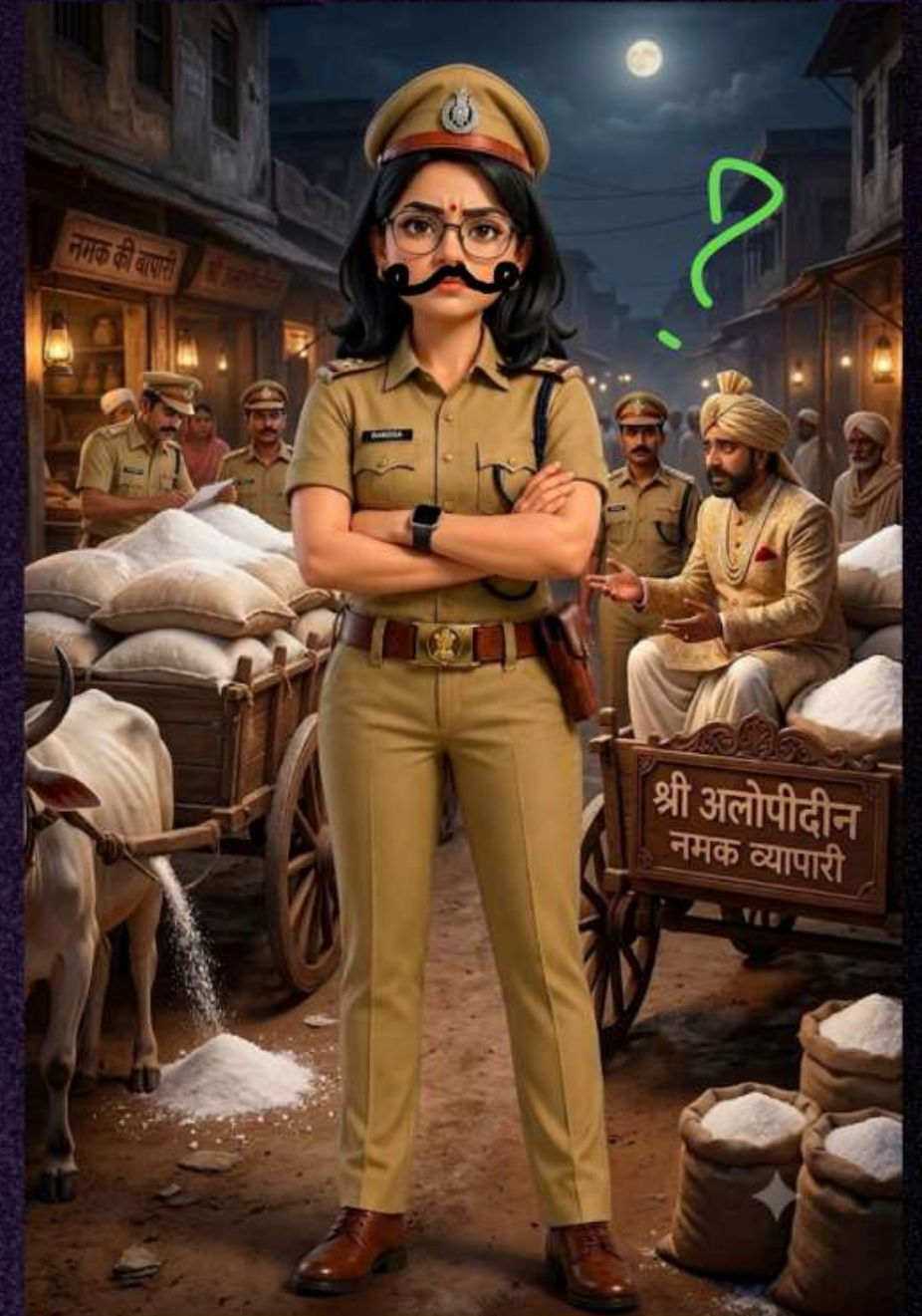
नमक का दारोगा

खैर वंशीधर ने जब गाड़ियों की जांच की तो पता चला कि गाड़ियों में नमक के बोरे भरे थे। उन्होंने गाड़ियां रोक ली। पंडित अलोपीदीन को जब एक व्यक्ति ने कहा कि उनकी गाड़ियों को दारोगा ने रोक लिया है तो उन पर इस बात का कुछ खास असर नहीं पड़ा, क्योंकि उन्हें अपने धन के बल पर बहुत विश्वास था। वह कहते थे कि सिर्फ इस धरती पर ही नहीं बल्कि स्वर्ग में भी लक्ष्मीजी का ही राज चलता है और उनका यह कहना काफी हद तक सच भी था क्योंकि न्याय और नीति यह सब आज के समय में लक्ष्मी जी के खिलौने ही तो हैं। वह जिसको जैसे नचाना चाहती हैं उसको वैसा ही नचा देती है। उन्होंने उस व्यक्ति को गर्व से कहा कि तुम चलो हम आते हैं।



नमक का दारोगा

पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर से गाड़ियां को रोकने के बारे में पूछा तो वंशीधर ने कहा कि वो सरकार के हुक्म का पालन कर रहे हैं। पंडित अलोपीदीन ने अब दारोगा जी को अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से रिश्वत के जाल में फंसाने की कोशिश की। दारोगा जी को धन लालच देकर गाड़ी छोड़ने के बारे में बात की। परंतु वंशीधर ईमानदार व्यक्ति थे। उन्होंने पैसे लेने की बजाए पंडित जी को ही गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया। यह देखकर पंडित जी आश्चर्यचकित रह गए। और उन्होंने रिश्वत की रकम बढ़ा कर फिर से वंशीधर को लालच दिया। मगर वंशीधर ने उनके लालच के मायाजाल में न फंस कर सीधे ही उनको गिरफ्तार कर लिया। यानी धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।



नमक का दारोगा

खबर चारों तरफ आग की तरह फैल गई। अगले दिन पंडित अलोपीदीन के हाथों में हथकड़ियां डालकर उन्हें अदालत में लाया गया। पंडित अलोपीदीन की गर्दन झुकी हुई थी और उनका हृदय शर्म व ग्लानि से भरा था। पंडितजी को कानून की गिरफ्त में देखकर वहां खड़े सभी लोग आश्चर्यचकित थे। खैर वकीलों व गवाहों की एक पूरी फौज खड़ी थी जो पंडितजी के पक्ष में बोलने को तैयार थी। अदालत में भी भरपूर पक्षपात हुआ और मुकद्दमा शुरू होते ही समाप्त हो गया। और पंडितजी को रिहा कर दिया गया लेकिन सत्यनिष्ठ और ईमानदार वंशीधर को अदालत ने भविष्य में सतर्क रहने की हिदायत दे दी।



नमक का दारोगा

पंडित अलोपीदीन अपने धन की शक्ति के बल पर पायी हुई जीत पर मुस्कुराते हुए वहां से बाहर निकले। और बेचारे वंशीधर लोगों के व्यंग बाण सुनते हुए। लगभग एक सप्ताह के अंदर ही वंशीधर को अपनी ईमानदारी का इनाम भी नौकरी से निकाले जाने के रूप में मिल गया यानी उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। हृदय में अथाह दुख लिए वो निराश मन से अपने घर की तरफ चल दिए। घर पहुंचकर पिता ने तो चार बातें सुनाई ही, पत्नी ने भी सीधे मुंह बात नहीं की। एक सप्ताह यूं ही गुजर गया।



जमक का दारोगा

एक शाम वंशीधर के पिता आंगन में बैठे राम नाम का जाप कर रहे थे। तभी वहां पंडित अलोपीदीन पहुंच गए। वंशीधर के पिता ने पंडित अलोपीदीन को देखा और उनका स्वागत किया और उनसे चापलूसी भरी बातें करने लगे और साथ में उन्होंने अपने बेटे को भी जमकर कोसना शुरू कर दिया। लेकिन जब पंडित अलोपीदीन ने उन्हें बताया कि उन्होंने अपने जीवन में ऐसे कई अमीरों व उच्च अधिकारियों को देखा है जिन्हें आसानी से पैसे से खरीदा जा सकता है। मगर अपने कर्तव्य को इतनी ईमानदारी व सच्चाई के साथ निभाने वाले व्यक्ति को उन्होंने अपने जीवन में पहली बार देखा। जिसने अपने कर्तव्य व धर्म को धन से बड़ा माना।



नमक का दारोगा

वंशीधर ने जब पंडित जी को देखा तो उन्हें लगा कि शायद पंडित जी उसे खरी खोटी सुनाने आए होंगे लेकिन पंडित जी की बातें सुनकर उसका भ्रम दूर हुआ। खैर काफी देर बातें करने के बाद वंशीधर ने पंडित जी से कहा कि वह जो भी हुकुम देंगे, वो उसको मानने के लिए तैयार हैं। इस पर पंडित जी ने स्टॉप लगा हुआ एक पत्र, इस प्रार्थना के साथ वंशीधर के हाथ में दिया कि वह उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर ले। वंशीधर ने जब उस पत्र को पढ़ा तो वह आश्चर्य चकित रह गया। दरअसल पंडित जी ने वंशीधर को अपनी सारी जायजाद का स्थाई मैनेजर नियुक्त किया था। यह देख वंशीधर की आंखों में आंसू आ गए और उन्होंने पंडित जी से कहा कि वह इस योग्य नहीं है। पंडित जी मुस्कुराते हुए बोले कि उन्हें अयोग्य आदमी ही चाहिए। वंशीधर बोला कि उसमें इतनी बुद्धि नहीं है कि वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी को संभाल सके। पंडित जी ने कहा कि उन्हें विद्वान व्यक्ति नहीं बल्कि ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की आवश्यकता है। वंशीधर ने कांपते हुए हाथों से उस पत्र पर दस्तखत कर दिए और पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर को खुशी से गले लगा लिया।

नमक का दारोगा

प्रश्न



पंडित अलोपीदीन का इलाके में कैसा प्रभाव था?



उत्तर-

पंडित अलोपीदीन अपने इलाके के बड़े प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित जमींदार थे जो लाखों रुपयों का लेन-देन करते थे तथा धन को ही सब कुछ मानते थे। प्रत्येक व्यक्ति उनसे बहुत प्रभावित था और उनका ऋणी भी था। वे प्रत्येक व्यक्ति को धन का लालच देकर उन्हें अपनी मुट्ठी में कर लेते और उन्हें कठपुतलियाँ बनाकर नचाते हुए उनसे सभी सही-गलत काम करवाते थे। इसी प्रकार सभी उनसे मोहित थे। इलाके का न्यायालय, वकील, पुलिस आदि सब उनके गुलाम थे।

नमक का दारोगा

प्रश्न



यह कहानी सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है, कैसे?



उत्तर-

प्रस्तुत कथन-"यह कहानी सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है"-पूर्णतः सत्य है। इस कहानी का नायक वंशीधर वास्तव में एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें प्रायः सभी सद्गुणों का निवास है; जैसे-आज्ञाकारी पुत्र, ईमानदार, परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ चरित्र वाला आदि। दूसरी ओर अलोपीदीन जिसने सदा झूठ, बेईमानी और धोखाधड़ी से ही जीवन गुजारा अपने असीमित धन से वंशीधर जैसे व्यक्ति को खरीदना चाहता था, किंतु अंत में वंशीधर के गुणों से प्रभावित होकर उसने उसे अपने ही यहाँ पर एक ऐसे पद के लिए नियुक्त किया जिसके लिए वंशीधर जैसे विश्वसनीय और ईमानदार व्यक्ति की आवश्यकता थी। इसलिए यह एक सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है। इसमें सद्गुणों के प्रभाव में आकर अवगुणों ने घुटने टेक दिए।

here



आरोह (आधार)

मियाँ नसीरुद्दीन

CHAPTER 2

मियाँ नसीरुद्दीन

जीवन परिचय

कृष्णा सोबती

जन्म:- 18 फ़रवरी सन् 1925, गुजरात (पश्चिमी पंजाब वर्तमान में पाकिस्तान)

प्रमुख रचनाएँ:- जिंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम (उपन्यास); डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के, (कहानी संग्रह); हम हशमत, शब्दों के आलोक में (शब्दचित्र, संस्मरण)

प्रमुख सम्मान:- साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार।

मृत्यु:- 25 जनवरी सन् 2019



कृष्णा सोबती

मियाँ नसीरुद्दीन

पाठ का सार

मियाँ नसीरुद्दीन अध्याय को “हम हशमत” नामक संग्रह से लिया गया है। जिसकी लेखिका “कृष्णा सोबती” हैं। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है। मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाश से रोटी पकाने की कला और उसमें अपने खानदानी महारत को बताते हैं। वे ऐसे इनसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और काम करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।



मियाँ नसीरुद्दीन

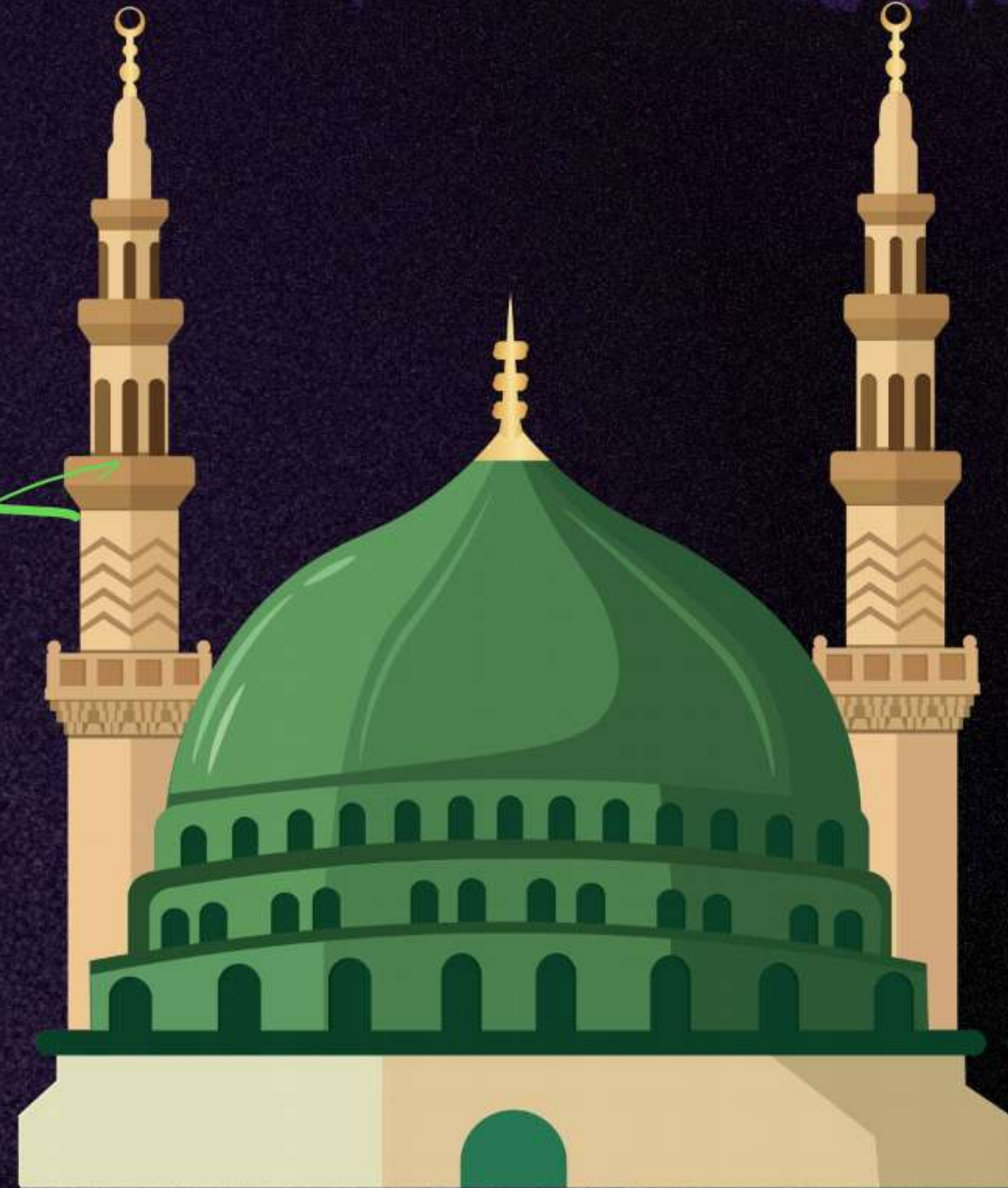
56

लेखिका कहती हैं कि एक ओर जहाँ दिल्ली में राजनीति, साहित्य और कला के हुनरमंद व प्रतिभाशाली लोग रहते हैं। वही दूसरी ओर इसी दिल्ली में एक खानदानी व हुनरमंद नानबाई (छप्पन किस्म की तंदूर रोटी बनाने में निपुण व्यक्ति) मियाँ नसीरुद्दीन भी रहते हैं। मियाँ नसीरुद्दीन को अपने खानदान व खानदानी पेशे पर बहुत नाज है। और वो अपने काम के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं।



मियाँ नसीरुद्दीन

लेखिका कहती हैं कि जब वो एक दिन दोपहर के वक्त जामामस्जिद के आड़ा पड़े मटिया महल के गढ़ैया मोहल्ले की तरफ से गुजरी तो, वहां एक अंधेरी व छोटी सी दुकान पर आटे का ढेर सनता देख लेखिका ने सोचा कि शायद दुकान में सिवानियाँ बनाने की तैयारी चल रही होगी। मगर पूछने पर पता चला की यह दुकान तो खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की हैं जो छप्पन प्रकार के नान बनाने के लिए मशहूर हैं।



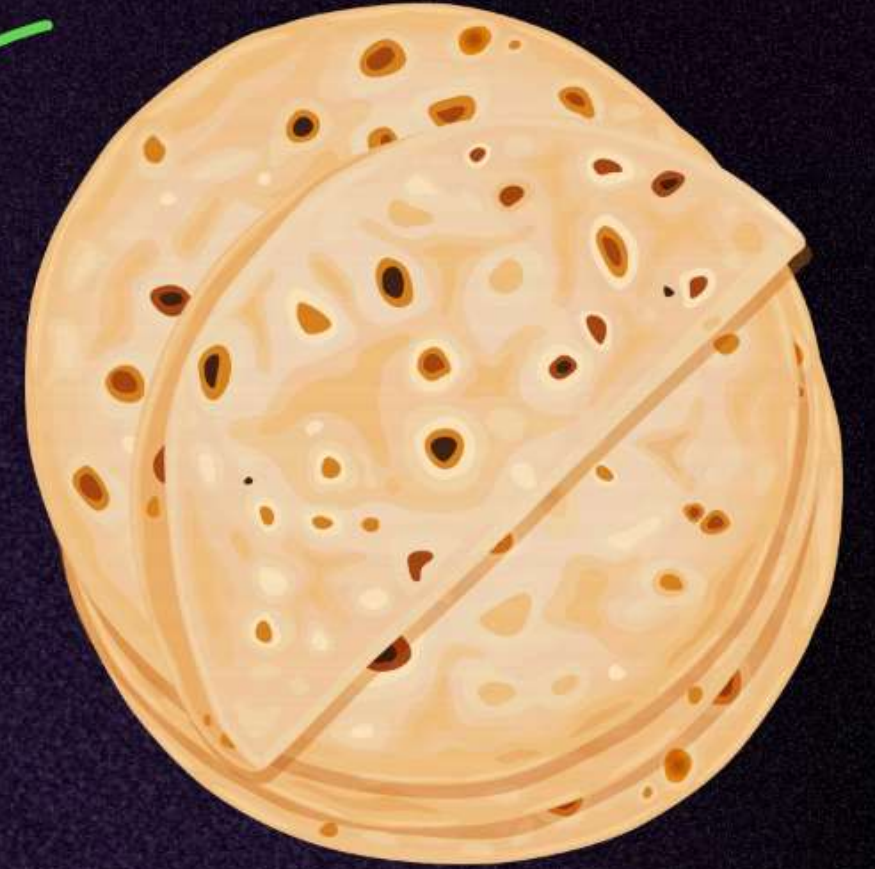
मियाँ नसीरुद्दीन

लेखिका ने जब दुकान के अंदर झाँक कर देखा तो मियाँ नसीरुद्दीन चारपाई में बैठे बीड़ी का मजा ले रहे थे। उनके चेहरे पर उनकी उम्र व काम का अनुभव साफ-साफ झलक रहा था। लेखिका को ग्राहक समझकर मियाँ नसीरुद्दीन ने उनकी तरफ देख कर पूछा “क्या चाहिए”। लेखिका ने जब उनसे कहा कि वो उनसे कुछ सवाल पूछना चाहती हैं तो मियाँ नसीरुद्दीन ने उनकी तरफ किसी पंचहजारी यानि 5000 सैनिकों के सेनापति की तरह देखा अर्थात् अकड़ कर देखा। फिर वो बोले कहीं आप अखबार वाले तो नहीं हैं क्योंकि मियाँ नसीरुद्दीन अखबार बनाने वाले और अखबार पढ़ने वाले, दोनों को ही निठुला समझते हैं। लेखिका के मना करने पर उन्होंने लेखिका से प्रश्न पूछने को कहा। इस पर लेखिका प्रश्न पूछती हैं कि उन्होंने इतने प्रकार की रोटियों को बनाने का हुनर कहां से सीखा।



मियाँ नसीरुद्दीन

इस पर वो थोड़ा उखड़ कर कहते हैं कि रोटियाँ बनाने का हुनर हमने कहीं से नहीं सीखा। यह तो हमारा खानदानी पेशा है। हमने जो भी सीखा अपने पिता और दादा से सीखा। और उनकी मृत्यु के बाद हम दुकान में बैठने लगे। इसके बाद मियाँ नसीरुद्दीन अपने दादा व पिता के नाम बताते हुए कहते हैं कि वो अनेक प्रकार की रोटियाँ बनाने के लिए बहुत मशहूर थे। लेखिका जब उनसे पूछती हैं कि क्या अपने पिता या दादा की कोई नसीहत उनको याद है। इस पर वो जवाब देते हुए कहते हैं कि “काम करने से आता है नसीहतों से नहीं” ।



मियाँ नसीरुद्दीन

वो अपनी इस बात को एक उदाहरण के जरिए लेखिका को समझाते हुए कहते हैं कि बच्चा जब उस्ताद के साथ पढ़ने बैठता है तो वह उस्ताद की कही हुई बातों को दोहराता रहता है मगर थोड़ी सी गलती होने पर उस्ताद की मार भी खाता है। और इस तरह वह धीरे-धीरे चीजों को सही तरीके से सीखता चला जाता है। इसके बाद वो कहते हैं कि एक दूसरी तरह की पढ़ाई भी होती है। लेखिका के यह पूछने पर कि दूसरी तरह की पढ़ाई कौन सी होती है। अब मियाँ नसीरुद्दीन थोड़े दार्शनिक अंदाज में बताते हैं कि अगर किसी बच्चे का मदरसे में जाकर सीधे तीसरी कक्षा में दाखिला करा दिया तो, वह बच्चा पहली व दूसरी कक्षा की शिक्षा कैसे हासिल करेगा। पहली व दूसरी कक्षाओं की शिक्षा ग्रहण करने के लिए उसे उन कक्षाओं में बैठकर पढ़ना पड़ेगा। इसी तरह मैंने भी शुरुआत में बर्तन धोना, भट्टी जलाना आदि सीखा। फिर नानबाई बनने का हुनर सीखा। वो कहते हैं कि “तालीम की तालीम” भी बड़ी चीज होती है। यहां पर “तालीम की तालीम” से मतलब है कि किसी हुनर को सीखने के लिए लिये जाने वाले प्रशिक्षण के दौरान कैसा शिक्षण हुआ। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षण भी महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक व शिक्षा दोनों गुणवत्तापूर्ण होंगे तो, प्रशिक्षण भी अच्छा ही होगा।



मियां नसीरुद्दीन

लेखिका के शहर के और नानबाईयों के बारे में पूछने पर मियां नसीरुद्दीन जोश में आकर कहते हैं कि “शहर में हैं तो बहुत सारे नानबाई, मगर खानदानी कोई नहीं है”। फिर वो अपने बुजुर्गों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि उनके बुजुर्गों से बादशाह सलामत ने कहा कि मियां कोई ऐसी नई चीज बना कर खिला सकते हो, जो ना तो आग में पके और न ही पानी से पके। लेखिका ने बड़ी हैरान से मियां नसीरुद्दीन से पूछा कि क्या आपके बुजुर्गों से ऐसी कोई चीज बनी? मियां नसीरुद्दीन बोले क्यों ना बनती साहेब, बनी भी और बादशाह सलामत ने खूब खाई और खूब सराही भी। लेखिका के बार-बार उस पकवान का नाम पूछने पर वो पकवान का नाम बताने पर आनाकानी करने लगे।

मगर मियां नसीरुद्दीन ने बड़े गर्व के साथ यह जरूर बताया कि “खानदानी नानबाई तो कुँए में भी रोटी बना सकता है”। यह कहावत कब बनाई गई होगी, यह तो मियां नसीरुद्दीन को पता नहीं था। मगर उनके अनुसार यह कहावत उनके बुजुर्गों के करतब पर बिल्कुल खरी उतरती है।



मियाँ नसीरुद्दीन

लेखिका ने मियाँ नसीरुद्दीन से अगला सवाल किया कि आपके बुजुर्गों ने किस बादशाह के यहाँ शाही खानसामे का काम किया था। वो इस प्रश्न का जबाब देने के बजाय टालने लगते हैं। लेकिन लेखिका के यह कहने पर कि अगर वो दिल्ली के उस बादशाह का नाम बता देते जिनके यहाँ उनके बुजुर्गों ने काम किया है तो वो “वक्त से वक्त” मिला लेती। यहां पर “वक्त से वक्त” मिलाने का मतलब यह है कि अगर उन्हें बादशाह का नाम पता चल जाता तो, वो आसानी से यह पता कर सकती थी कि कौन से वर्ष में उनके बुजुर्गों ने बादशाह के यहाँ काम किया होगा। इस प्रश्न का जबाब वो जरा चिढ़कर देते हुए कहते हैं कि “वक्त को वक्त” से किसी ने मिलाया है आजतक। खैर उस बादशाह का नाम था “जहाँपना बादशाह सलामत”।



मियाँ नसीरुद्दीन

लेखिका के यह कहने पर कि कहीं वो बादशाह, बहादुर शाह जफर तो नहीं थे। वो नाराज होते हुए कहते हैं कि यही लिख लीजिए। आपको कौन से उनके नाम चिट्ठी भेजनी है जो एकदम सही पता चाहिए। इसके बाद वो अपने कारीगर को आवाज लगाते हैं। लेखिका के यह पूछने पर कि क्या ये आपके शागिर्द हैं। उन्होंने जबाब दिया नहीं ये उनके कारीगर हैं जिनको वो दो रुपए मन आटा और चार रुपए मन मैदा गूँदने के देते हैं। लेखिका ने जब मियाँ नसीरुद्दीन से यह जानना चाहा कि वो कितने प्रकार की रोटी बनाते हैं। इसके जबाब में वो कई प्रकार की रोटियों के नाम बताते हैं। फिर पुरानी बातों को याद करते हुए कहते हैं कि कभी लोग उनकी रोटियों के कद्रदान हुआ करते थे। अब वो बात नहीं रही। अब तो लोग आते हैं, खाते हैं और रोटियों को पचा देते हैं। यहाँ मियाँ नसीरुद्दीन पुराने लोगों द्वारा उनकी रोटियों की, की जाने वाली तारीफ़ को याद कर रहे हैं। उनके अनुसार अब लोगों को रोटियों की कद्र नहीं रही है।



मियाँ नसीरुद्दीन

प्रश्न



मियाँ नसीरुद्दीन के चरित्र पर अपनी टिप्पणी करें।



उत्तर-

मियाँ नसीरुद्दीन का चरित्र दिलचस्प है। वे अपने पारंपरिक पेशे में माहिर हैं; वे ऐसे कलाकार हैं जिनकी कला उनके साथ ही लुप्त होने को है। उनका बात करने का अंदाज बड़ा ही निराला है। यदि उनसे कोई सवाल पूछा जाए तो उसके बदले में वे अनेक सवाल पूछना शुरू कर देते हैं। बड़े ही घुमा-फिराकर जवाब देने तक पहुँच पाते हैं। अपने क्षेत्र में वे स्वयं को सर्वोच्च मानते हैं। दार्शनिकता में सुकरात से कम नहीं हैं। बातूनी बहुत हैं, पर काम करने में उनकी जो आस्था और महारथ है वह अनुकरणीय है। वे आँखों में काइयाँ भोलापन, पेशानी पर मँजे हुए कारीगर के तेवर लिए, चेहरे पर मौसमों की मार के साथ बात इस तरह करते मानो कविता; जैसे-वक्त से वक्त को मिला सका है कोई ! तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है आदि।

मियाँ नसीरुद्दीन

प्रश्न



बच्चे को मदरसे भेजने के उदाहरण द्वारा मियाँ नसीरुद्दीन क्या समझाना चाहते थे?



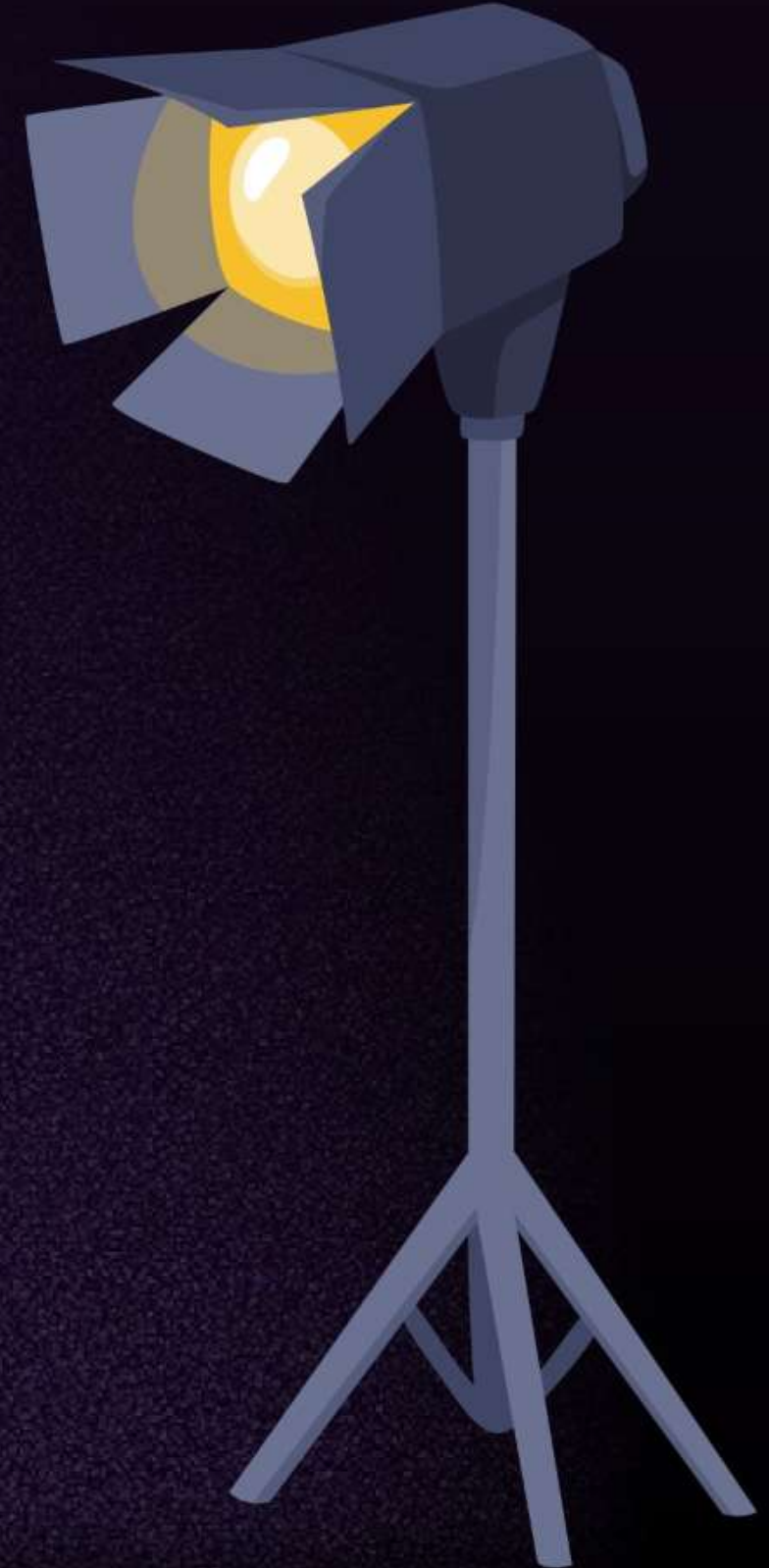
उत्तर-

‘बच्चे को मदरसे भेजा जाए और वह कच्ची में न बैठे, न पक्की में, न दूसरी में और जा बैठा सीधा तीसरी में तो उन तीन किलासों का क्या हुआ?’ यह उदाहरण देकर मियाँ यह समझाना चाहते हैं कि उन्होंने भी पहले बर्तन धोना, भट्टी बनाना और भट्टी को आँच देना सीखा था, तभी उन्हें रोटी पकाने का हुनर सिखाया गया था। खोमचा लगाए बिना दुकानदारी चलानी नहीं आती।

आरोह (आधार)

अपू के साथ ढाई साल

CHAPTER 3



अपू के साथ ढाई साल

जीवन परिचय

जन्म:- 1921, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

प्रमुख फ़िल्में: अपराजिता, अपू का संसार, जलसाघर, देवी चारुलता, महानगर, गोपी गायेन बाका बायेन, पथेर पांचाली (बांग्ला); शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति (हिंदी)

प्रमुख रचनाएँ: प्रो. शंकु के कारनामे, सोने का किला, जहाँगीर की स्वर्ण मुद्रा, बादशाही अँगूठी आदि।

प्रमुख सम्मान: फ्रांस का लेजन डी ऑनर, पूरे जीवन की उपलब्धियों पर ऑस्कर और भारतरत्न सहित फ़िल्म जगत का हर हर महत्वपूर्ण सम्मान

मृत्यु: सन् 1992



सत्यजित राय

अपू के साथ ढाई साल

पाठ का सार

‘अपू के साथ ढाई साल’ नामक संस्मरण पथेर पांचाली फिल्म के अनुभवों से संबंधित है, जिसका निर्माण भारतीय फिल्म के इतिहास में एक बहुत बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इसके लेखक सत्यजीत राय हैं जो फिल्म ‘पथेर पांचाली’ के निर्देशक भी हैं। इस संस्मरण में फिल्म के सृजन तथा उसके व्याकरण से संबंधित कई बारीकियों का पता चलता है।

फिल्म ‘पथेर पांचाली’ के बनने में पूरे ढाई साल लगे थे। फिल्म में अपू और दुर्गा की मुख्य भूमिका थी। अपू की भूमिका के लिए छह साल के लड़के की जरूरत थी, जिसके लिए लेखक ने अखबार में विज्ञापन दिया था।

आखिरकार उन्हें अपने ही पड़ोस के घर में रहने वाला लड़का सुबीर बनर्जी ही अपू की भूमिका के लिए उपयुक्त लगा।



अपू के साथ ढाई साल

लेखक को इस बात का डर था कि समय बीतने के साथ-साथ अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे ज्यादा बड़े न दिखने लगें। खुशकिस्मती से ऐसा नहीं हुआ। शूटिंग की शुरुआत कलकत्ता से सत्तर मील दूर पालसिट नाम के गाँव में हुई। वहाँ रेल-लाइन के पास काशफूलों से भरा एक मैदान था। सीन बहुत बड़ा था, जिसकी शूटिंग एक दिन में होनी नामुमकिन थी। सात दिन बाद जब बाकी के आधे सीन की शूटिंग करने वहाँ आए तो पता चला कि सारे काशफूल गायब हैं। सारे काशफूल जानवार खा गए। इस कारण लेखक को बाकी अंश की शूटिंग अगले साल शरद ऋतु में करनी पड़ी जब वह मैदान काशफूलों से भर गया।



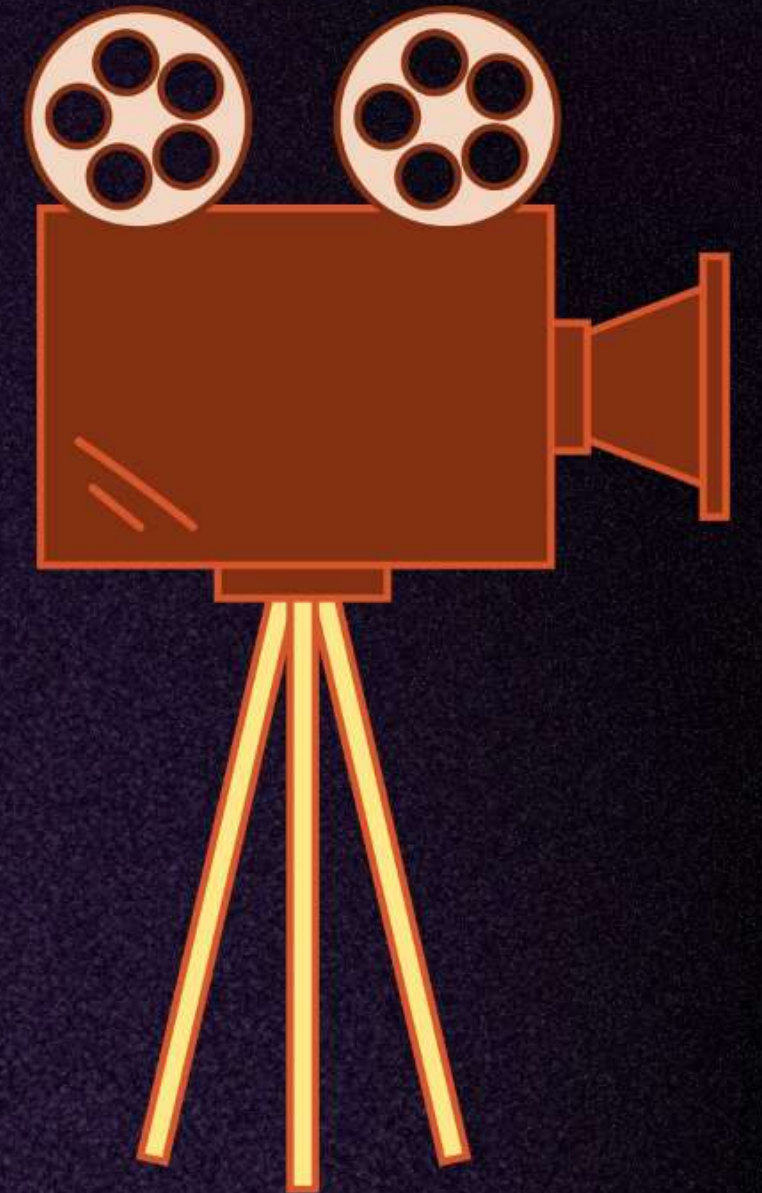
अपू के साथ ढाई साल

इस सीन की शूटिंग में पहली बार लेखक ने तीन रेलगाड़ियों का इस्तेमाल किया। चूँकि लेखक स्वयं एक विज्ञापन कंपनी में काम करते थे, इसलिए जब उन्हें समय मिलता था तो शूटिंग कर लेते थे। उनके पास पर्याप्त पैसों का भी अभाव रहता था। इस कारण उन्हें कई परेशानियों का भी सामना करना पड़ा था। पैसे के अभाव के कारण फिल्म में भूलो कुत्ते के आधे सीन को चित्रित कर बीच में छोड़ दिया गया। छह महीने बाद पैसे जमा होने के बाद जब शूटिंग दोबारा शुरू की गई तो पता चला कि भूलो अब इस दुनिया में नहीं रहा। आखिर बहुत कोशिशों के बाद उसी गाँव में एक कुत्ता मिला जो हुबहू भूलो के जैसा दीखता था। बाकी सीन की शूटिंग उसी कुत्ते के साथ की गई



अपू के साथ ढाई साल

फिल्म में श्रीनिवास की भूमिका निभाने वाले कलाकार की भी बीच में ही अचानक मौत हो गई। लेखक को उन्हीं के चेहरे से मिलता-जुलता एक व्यक्ति मिला, जिसके साथ बाकी अंश चित्रित किया गया। पैसों की कमी के कारण बारिश का दृश्य भी चित्रित करने में बहुत मुश्किल आई थी, जिसके कारण बरसात के दिनों में शूटिंग बंद कर दी गई। आखिरकार, अक्टूबर में शूटिंग शुरू की गई, जब बारिश कम हुआ।



अपू के साथ ढाई साल

शूटिंग की दृष्टि में गोपाल ग्राम की अपेक्षा बोडाल गाँव अधिक उपयुक्त था क्योंकि वहाँ का माहौल शूटिंग के अनुकूल था। गाँव में शूटिंग करते समय लेखक का अनेक लोगों से परिचय हुआ, जो अलग-अलग व्यक्तित्व के थे। जिस घर में फिल्म की शूटिंग चल रही थी, उसका मालिक कलकत्ता में रहता था। उस घर में एक ऐसा भी कमरा था जहाँ बैठकर साउंड रिकार्डिंग का काम किया जाता था। वहीं साउंड रिकार्डिस्ट भूपेन बाबू का सामना एक बड़े साँप से हुआ, जो स्थानीय लोगों के अनुसार वास्तुसर्प था। लेखक उसे मारना चाहते थे, लेकिन लोगों के मना करने पर उन्होंने ऐसा नहीं किया।



अपू के साथ ढाई साल

इस प्रकार, फिल्म की शूटिंग पूरा होने के दौरान कई ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं, जो लेखक के लिए परेशानी का कारण बनीं। लेकिन, इन सब के बावजूद भी लेखक ने इसकी शूटिंग ढाई साल में पूरी की। परिणामतः, इसमें फिल्माए गए दृश्य बहुत अच्छी तरह चित्रित हुए तथा यह फिल्म लोगों को बहुत पसंद आई।



अपू के साथ ढाई साल

प्रश्न



‘वास्तुसर्प’ क्या होता है? इससे लेखक का कार्य कब प्रभावित हुआ?



उत्तर-

वास्तुसर्प वह होता है जो घर में रहता है। लेखक ने एक गाँव में मकान शूटिंग के लिए किराये पर लिया। इसी मकान के कुछ कमरों में शूटिंग का सामान था। एक कमरे में साउंड रिकार्डिंग होती थी जहाँ भूपेन बाबू बैठते थे। वे साउंड की गुणवत्ता बताते थे। एक दिन उन्होंने उत्तर नहीं दिया। जब लोग कमरे में पहुँचे तो साँप, कमरे की खिड़की से नीचे उतर रहा था। इसी डर से भूपेन ने जवाब नहीं दिया।

अपू के साथ ढाई साल

प्रश्न



सत्यजित राय को कौन-सा गाँव सर्वाधिक उपयुक्त लगा तथा क्यों?



उत्तर-

सत्यजित राय को बोडाल गाँव शूटिंग के लिए सबसे उपयुक्त लगा। इस गाँव में अपू-दुर्गा का घर, अपू का स्कूल, गाँव के मैदान, खेत, आम के पेड़, बाँस की झुरमुट आदि सब कुछ गाँव में या आसपास मिला।

आरोह (आधार)

**हम तौ एक एक करि जांनां
(कबीर)**

CHAPTER 9



हम तो एक एक करि जांनां।

जीवन परिचय

जन्म: सन् 1398, वाराणसी' के पास 'लहरतारा' (उ.प्र.)
प्रमुख रचनाएँ: 'बीजक' जिसमें साखी, सबद एवं रमैनी
संकलित हैं।

मृत्यु: सन् 1518 में बस्ती के निकट मगहर में।

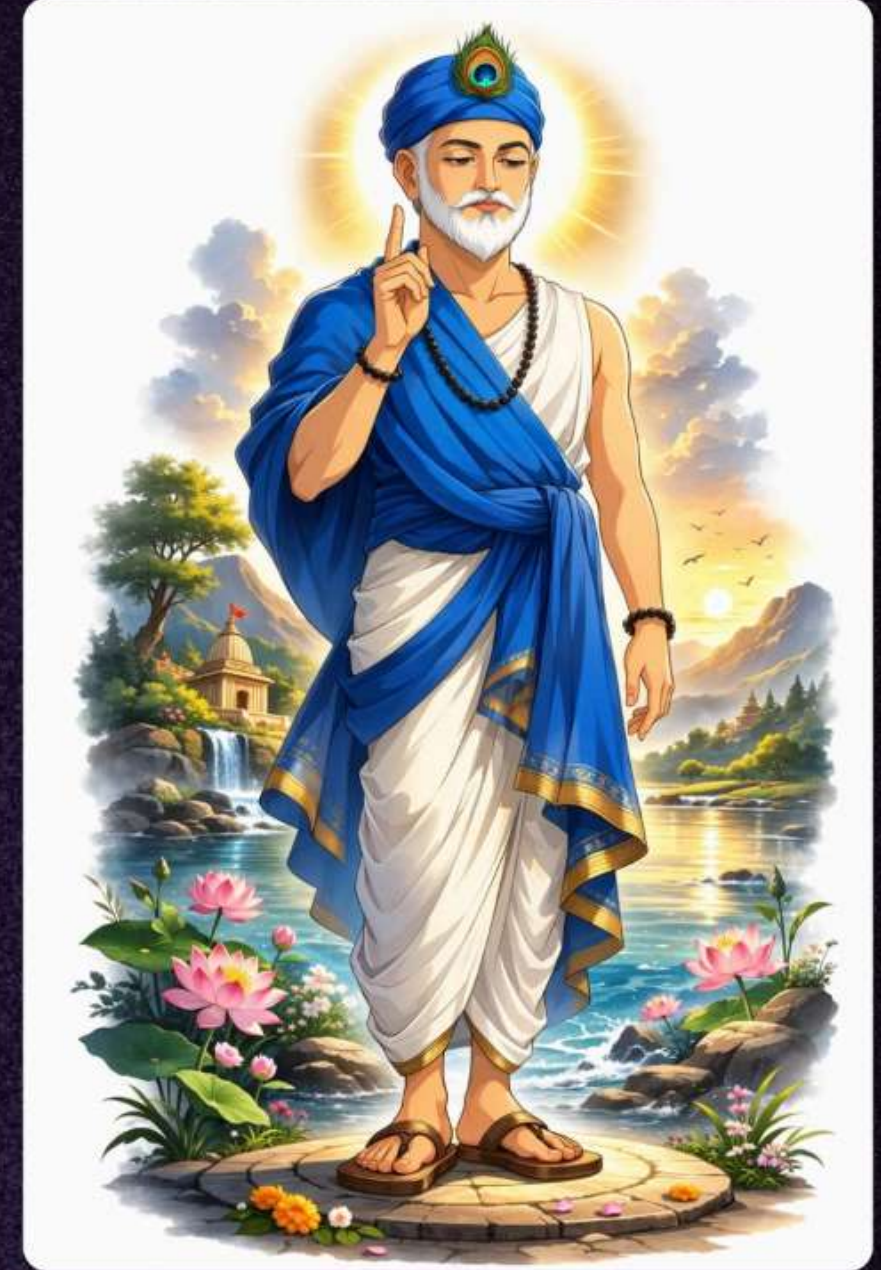


कबीर

हम तौ एक एक करि जांनां।

पद

हम तौ एक एक करि जांनां।
दोड़ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां ।।
एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोंहरा सांनां ।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अग्नि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।
माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबांनां।
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवांनां ।।



हम तो एक एक करि जांनां।

प्रश्न



कबीर ने अपने को दीवाना' क्यों कहा है?



उत्तर-

'दीवाना' शब्द का अर्थ है-पागल। कबीर स्वयं के लिए इस शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि वे झूठे संसार से दूर प्रभु (परमात्मा) में लीन हैं, भक्ति में सराबोर हैं। उनकी यह स्थिति संसार के लोगों की समझ से परे है, अतः वे स्वयं के लिए इस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं।

हम तौ एक एक करि जांनां।

प्रश्न



मानव शरीर का निर्माण किन पंच तत्वों से हुआ है?



उत्तर-

मानव शरीर का निर्माण धरती, पानी, वायु, अग्नि व आकाश इन पाँच तत्वों से हुआ है।
मृत्यु के बाद में तत्व अलग-अलग हो जाते हैं।

हम तो एक एक करि जांनां।

प्रश्न



जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।

सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई॥

इसके आधार पर बताइए कि कबीर की दृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

हम तो एक एक करि जांनां।



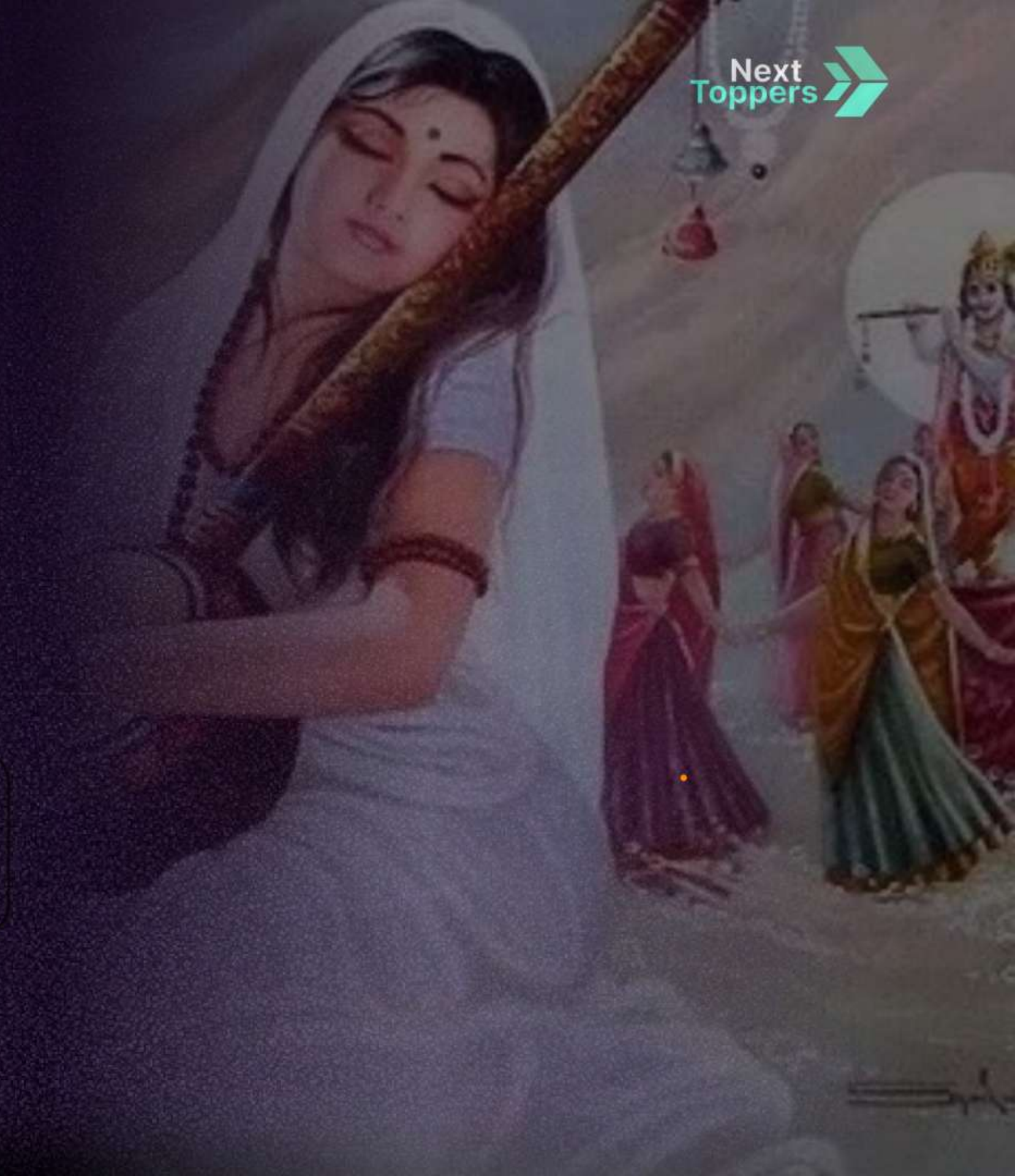
उत्तर-

कबीरदास ईश्वर के स्वरूप के विषय में अपनी बात उदाहरण से पुष्ट करते हैं। वह कहते हैं कि जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को काट देता है, परंतु उस लकड़ी में समाई हुई अग्नि को नहीं काट पाता, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में ईश्वर व्याप्त है। शरीर नष्ट होने पर आत्मा नष्ट नहीं होती। वह अमर है। आगे वह कहता है कि संसार में अनेक तरह के प्राणी हैं, परंतु सभी के हृदय में ईश्वर समाया हुआ है और वह एक ही है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापक तथा अजर-अमर है। वह सभी के हृदयों में आत्मा के रूप में व्याप्त है।

आर्योह (आधार)

मीरा पद

CHAPTER 10



मीरा पद

जीवन परिचय

जन्म: सन् 1498, कुड़की गाँव (मारवाड़ रियासत)

प्रमुख रचनाएँ: मीरा पदावली, नरसीजी-रो-माहेरो

मृत्यु: सन् 1546



मीरा

मीरा पद

पद

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छाड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोयी
अंसुवन जल सीचि-सीचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गयी, आणंद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही



मीरा पद

प्रश्न



मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?



उत्तर-

मीरा कृष्ण की उपासना पति रूप में करती हैं। वे स्वयं को पत्नी व अपने आराध्य श्रीकृष्ण को पति मानती हैं। उनके श्रीकृष्ण मोर मुकुट को धारण किए हुए हैं, पर्वत को धारण किए हुए गिरिधर गोपाल हैं। वे श्रीकृष्ण को ही अपना सब कुछ मानती हैं और कहती हैं कि उनके सिवा मेरा कोई नहीं है।

मीरा पद

प्रश्न



मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?



उत्तर-

मीरा जगत को देखकर इसलिए रोती हैं क्योंकि वे देखती हैं कि किस प्रकार लोग सांसारिक मायाजाल में फंसकर अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे हैं। वे मानती हैं कि जीवन की सार्थकता सिर्फ श्रीकृष्ण की भक्ति में है। स्वयं को तारणहारी श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित करके, उनके प्रेम में डूबकर ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। इसलिए जब वे लोगों को सांसारिक सुख-दुख, मोह-माया, लोभ, ईर्ष्या, बैर आदि में लिप्त होकर, जीवन व्यर्थ गंवाता देखती हैं तो बहुत आहत होती हैं।



मीरा पद

प्रश्न



मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?



उत्तर-

मीरा जगत को देखकर इसलिए रोती हैं क्योंकि वे देखती हैं कि किस प्रकार लोग सांसारिक मायाजाल में फंसकर अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे हैं। वे मानती हैं कि जीवन की सार्थकता सिर्फ श्रीकृष्ण की भक्ति में है। स्वयं को तारणहारी श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित करके, उनके प्रेम में डूबकर ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। इसलिए जब वे लोगों को सांसारिक सुख-दुख, मोह-माया, लोभ, ईर्ष्या, बैर आदि में लिप्त होकर, जीवन व्यर्थ गंवाता देखती हैं तो बहुत आहत होती हैं।

वितान(आधार)

**भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ -
लता मंगेशकर (कुमार गंधर्व)**

CHAPTER 1



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

‘भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ – लता मंगेशकर’ पाठ के लेखक कुमार गंधर्व जी हैं। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने बड़ी ही खूबसूरती से लता मंगेशकर जी के विराट व्यक्तित्व व उनकी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने वाली अद्भुत गायन शैली की विशेषताओं का वर्णन किया है जिसकी वजह से आज शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों की रूचि बढ़ रही है।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

लेखक कहते हैं कि इस महान स्वर कोकिला के गानों को सिर्फ अपने देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लोग सुनना पसंद करते हैं। अर्थात् लता मंगेशकर को देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी प्रसिद्धि प्राप्त थी। स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी के प्रशंसक पूरी दुनिया के कोने-कोने में हैं। इस पूरे पाठ में लेखक ने लता मंगेशकर के गायन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

पाठ की शुरुआत में लेखक बताते हैं कि बरसों पहले एक बार जब वो बीमार पड़ गये थे तो उन्होंने यूँ ही अपना रेडियो चलाया जिसमें उस वक्त बहुत ही मधुर स्वर में एक गाना बज रहा था। गाना सुनकर उन्हें महसूस हुआ कि उस गाने के स्वर में कुछ तो खास बात है जो सीधे उनके दिल में उतर गया। लेकिन उस समय उन्हें पता नहीं था कि यह स्वर किसका है यानि इस गाने की गायिका कौन है। गाना समाप्त होने के बाद जब रेडियो के माध्यम से लेखक को गायिका का नाम (लता मंगेशकर) पता चला तो उन्हें पता चला कि लता मंगेशकर सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की सुपुत्री थी और लेखक को महसूस हुआ कि सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की आवाज ही दूसरा स्वरूप लेकर लता मंगेशकर के स्वरों के माध्यम से उनके कानों पर पड़ रही हो।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

लेखक कहते हैं कि चित्रपट संगीत (फिल्मी गाने और गीत संगीत) में लता जी जैसी कोई अन्य गायिका नहीं हुई। हालांकि उनसे पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना एक जमाना था लेकिन उनके बाद आई लता मंगेशकर उनसे कहीं आगे निकल गई। कला के क्षेत्र में इस तरह के चमत्कार भी कभी-कभार ही देखने को मिलते हैं।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

लता मंगेशकर जी ने चित्रपट संगीत को लोकप्रिय व कर्णप्रिय बनाया। आम जनमानस के अंदर संगीत के प्रति रुचि पैदा करने में लता मंगेशकर जी का बहुत बड़ा योगदान है। चित्रपट संगीत के कारण ही लोगों को संगीत व स्वर के सुरीलीपन की समझ हो रही है। उन्होंने नई पीढ़ी की रुचि के अनुसार संगीत को उन तक पहुंचाया। इस वजह से संगीत की लोकप्रियता, उसके प्रचार-प्रसार और अभिरुचि के विकास का श्रेय लताजी को ही जाता है। लेखक पाठ में यह भी कहते हैं कि अगर एक सामान्य श्रोता को शास्त्री गायन तथा लता मंगेशकर के गाने में से किसी एक को चुनने को कहा जाए, तो सामान्य श्रोता लता मंगेशकर का ही गाना सुनना पसंद करेगा।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

इसका प्रमुख कारण है लता मंगेशकर जी के गानों में “गानपन” का होना यानि गाने में वह मिठास और निर्मलता जिसे सुनकर श्रोता का मन आनंदित हो उठता है।

लेखक कहते हैं कि लता मंगेशकर के गानों की विशेषता, उनके स्वरों की निर्मलता भी थी। जहाँ सुप्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ के गानों में एक मादक उत्तान दिखता था वही लताजी के स्वरों में कोमलता व मुग्धता थी। लता जी के गानों की एक और विशेषता थी, उनका नादमय उच्चार। उनके गीत के किन्ही दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता था और ऐसा प्रतीत होता था कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक दूसरे में मिल जाते थे।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

क्योंकि किसी भी गायक के लिए ऐसा कर पाना थोड़ा कठिन होता है लेकिन लता जी इसे बहुत ही सहज और स्वाभाविक ढंग से कर देती थी। हालाँकि लेखक यहाँ पर यह भी कहते हैं कि लता मंगेशकर जी ने करुण रस के गाने उतनी अच्छी तरह से नहीं गाए जितनी अच्छी तरह से उन्होंने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने गाए। लता जी का ऊँचे स्वर में गीत गाना भी लेखक को उनके गायन में कमी लगती है। इसका दोष वो लता जी को देने के बजाय उन संगीत निर्देशकों को देते हैं जिन्होंने उनसे ऊँची पट्टी में गाने गवाँए।

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

लेखक के अनुसार शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत की तुलना नहीं की जा सकती हैं क्योंकि शास्त्रीय संगीत की विशेषता उसकी गंभीरता है जबकि चित्रपट संगीत की विशेषता उसकी चपलता, सुलभता और लोचता में है। चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है जबकि शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है। चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है और निसंदेह लता जी को शास्त्रीय संगीत की भी बहुत अच्छी जानकारी थी। उनके द्वारा गाए गए तीन या साढ़े तीन मिनट के गाने लोगों के दिलों को छू जाते थे और वो उस गाने को गुनगुनाने के लिए बाध्य हो जाते थे। लता मंगेशकर जी का एक-एक गाना एक संपूर्ण कलाकृति होता है। उनके गाने स्वर, लय और शब्दार्थ का त्रिवेणी संगम होते हैं। लेखक यह भी स्पष्ट करते हैं कि चाहे वह चित्रपट संगीत हो या शास्त्री संगीत, अंत में उसी गाने का महत्व अधिक होता है जो श्रोताओं के दिल को छू जाए, जिसको सुनकर श्रोताओं का मन आनंदित हो उठे। गाने की सारी ताकत उसकी रंजकता पर ही निर्भर करती है।

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

लेखक कहते हैं कि संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर का स्थान अब्बल दर्जे के खानदानी गायक के समान ही है। हालाँकि कुछ खानदानी गायक कहते हैं कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए हैं लेकिन लेखक कहते हैं कि चित्रपट संगीत के कारण ही लोगों को संगीत की अच्छी समझ हो गई है। लेखक के अनुसार शास्त्रीय गायकों ने संगीत के क्षेत्र में अपनी हुक्मशाही स्थापित कर रखी है। उन्होंने शास्त्र शुद्धता के कर्मकांड को आवश्यकता से अधिक महत्व दे रखा है। जबकि आजकल लोगों को शास्त्र शुद्ध और नीरज गाना नहीं बल्कि सुरीला व भावपूर्ण गाना पसंद आता है और यह सब चित्रपट संगीत के कारण ही संभव हो पाया है। चित्रपट संगीत का तंत्र कुछ अलग ही है जिसमें कुछ नया करने की गुंजाइश सदैव बनी रहती है।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

बड़े-बड़े संगीतकारों ने राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली और अन्य प्रदेशों के लोकगीतों का चित्रपट संगीत में खूब प्रयोग किया। इसके साथ ही लोकगीत, पहाड़ी गीत तथा कृषि संबंधित गीतों का भी चित्रपट संगीत में अच्छा प्रयोग किया जा रहा है। इसी वजह से चित्रपट संगीत दिनोंदिन और अधिक विकसित होता जा रहा है। और इस चित्रपट संगीत की अघोषित साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी हैं। चित्रपट संगीत में पार्श्व गायक-गायिकाएँ तो बहुत हैं लेकिन लता मंगेशकर के जैसी लोकप्रियता किसी ने हासिल नहीं की है। वो लोकप्रियता के शिखर पर अचल व अडिग खड़ी है। लगभग आधी शताब्दी तक लोगों के दिलों में राज करना कोई आसान काम नहीं है। उनके गानों को सुनकर देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लोग झूम उठते हैं। यह किसी चमत्कार से कम नहीं कि उन्हें हम प्रत्यक्ष रूप से देख चुके हैं। ऐसा कलाकार शताब्दियों में शायद एक ही पैदा होता है और यह हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है कि उन्हें हमने गाते हुए अपनी आंखों से देखा है।



भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर

प्रश्न



पाठ में किए गए अंतरों के अलावा  संगीत शिक्षक से चित्रपट संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का अंतर पता करें। इन अंतरों को सूचीबद्ध करें।

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ - लता मंगेशकर



उत्तर-



चित्रपट संगीत

शास्त्रीय संगीत	चित्रपट संगीत
इसे मार्गी संगीत भी कहा जाता है। यह स्वरों के अधार पर गाया जाता है। इसमें लय, ताल आदि का उल्लंघन वर्जित होता है। यह रागों पर आधारित होता है। इसमें आरोह, अवरोह आदि पर विशेष ध्यान दिया। इसमें हास्यरस का प्रायः अभाव रहता है।	इसमें लोकसंगीत तथा शास्त्रीय संगीत दोनों का ही प्रयोग हो सकता है। इसे स्वरों या बिना स्वरों के अनुसार परिस्थिति के अनुरूप गाया जाता है। इसका मुख्य आधार लोकप्रियता है, अतः इसके गायन में स्वतंत्रता है। इसमें रागों के साथ-साथ लोकगीतों का मिश्रण भी किया जाता है। इसमें कर्णप्रियता पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जाता है। फ़िल्मी संगीत में हास्य प्रधान गीतों का गायन भी खूब होता है।



THANK
YOU

